अप्रैल २०१६
कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

इम्प्रेशन डालना

संपादकीय

बालमित्रों,

इम्प्रेशन डालने का शौक किसे नहीं होता? सभी को होता है। अरे, मुझे भी था न। कुछ भी अच्छा काम किया हो तो सभी को बताकर अपनी समझदारी का रौब दिखा ही देता।

तब तो पता नहीं था कि इम्प्रेशन डालने में मैं अपना कितना नुकसान कर रहा हूँ। यह तो जब मैंने दादा की बात सुनी, तब समझ में आया कि इसमें क्या जोखिम है।

मेरी भावना है कि आप सभी इसके जोखिम को समझकर इसमें से बाहर निकल सको। यह अंक आपको इम्प्रेशन डालने की बुरी आदत से बाहर निकालने में ज़रूर मदद करेगा।

- डिम्पल मेहता

इम्प्रेशन डालना

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक :
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक : १
अखंड क्रमांक : ३७
अप्रैल २०१६

....

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

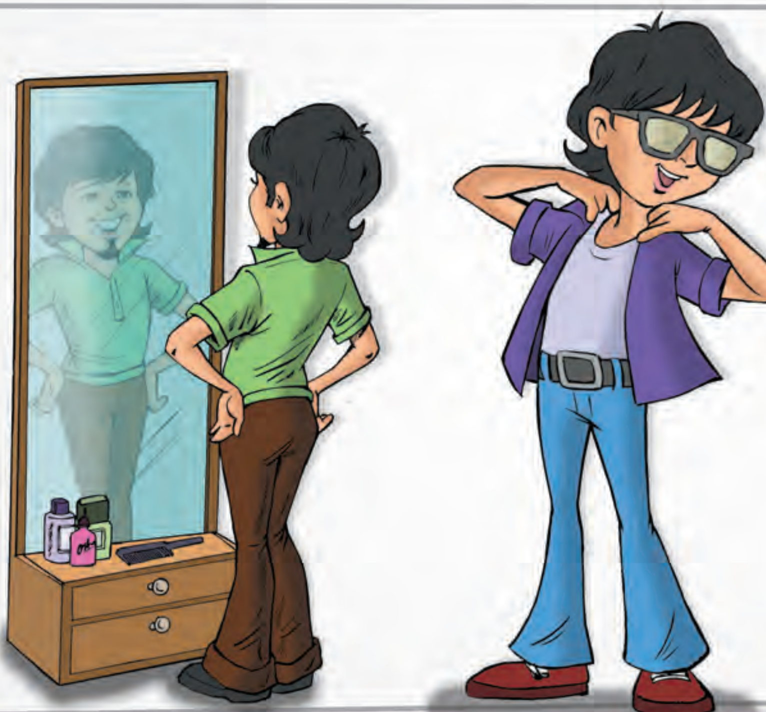

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : "मैं होशियार हूँ", "मैं समझदार हूँ", "मैं स्मार्ट हूँ", "मुझमें बहुत हुनर है", "मैं पढ़ा-लिखा हूँ", आदि मान्यताएँ हमारे अंदर होती ही हैं। इम्प्रेशन डालना यानी "मैं ऐसा हूँ... ऐसा हूँ.." ये मान्यताएँ हमारे अपने तक ही सीमित नहीं रहतीं, दूसरों के अंदर भी घुसाकर उन्हें यह मानने को मजबूर कर देते हैं। और यदि ऐसा इम्प्रेशन लोगों पर पड़ जाता है तो हम खुश हो जाते हैं।

"मेरे पास चार बंगले हैं, दो गाड़ियाँ हैं" ऐसा प्रदर्शन करना, अभिमान कहलाता है। लेकिन इसके लिए जो हेतु होता है, कि सामनेवाला हमारी छाप लेकर जाए कि मैं कैसा हूँ, तो इसे इम्प्रेशन डालना कहेंगे।

घर में रोज़ रोटी-सब्ज़ी खाते हों, लेकिन यदि कोई मेहमान आए तो इम्प्रेशन डालने के लिए फर्स्ट क्लास खाना बनाएँगे। रोज़ घर ऐसे ही बिखरा पड़ा रहता हो और कोई मेहमान आनेवाला हो, तो इम्प्रेशन डालने के लिए चकाचक साफ कर डालेंगे। दोस्तों के सामने उठने, बैठने, चलने, खाने, बोलने में स्टाइल मारेंगे इसे इम्प्रेशन डालना कहते हैं।

जिस पर इम्प्रेशन पड़ जाता है वह अपना भक्त हो जाता है। फिर हमें भी उसके प्रति राग हो जाता है।

इम्प्रेशन डालने की वृत्तिवाले को यदि दूसरे की इम्प्रेशन ज्यादा पड़ जाए तो सहन नहीं होता, दुःख हो जाता है।

दादाजी कहते हैं कि आपका इम्प्रेशन कब पड़ेगा? जब आपमें इम्प्रेशन डालने का भाव ही नहीं होगा, तब। सभी विशेषताओं में से बाहर निकल जाने के बाद ही इम्प्रेशन डालने की विशेषता में से बाहर निकल सकते हैं।

इम्प्रेशन डालने की वृत्ति में से छूटने के लिए एक ही बात का ध्यान रखना है कि मुझे किसी पर इम्प्रेशन डालना ही नहीं है। क्योंकि डाला हुआ इम्प्रेशन टिकता ही नहीं है। वह कब चला जाएगा कहा नहीं जा सकता। तो उसके लिए अपनी शक्ति बिगाड़ने से क्या फायदा?

इम्प्रेशन टिकता है?

"थैन्क यू सो मच, डैडी!" गाड़ी की चाबी मुट्ठी में लेकर, मयंक अपने डैडी से लिपट गया।

दस मिनट में उसने गाड़ी के बीस फोटो लेकर फेसबुक पर अपलोड कर दिए। इतना ही नहीं, बल्कि अपने खास फ्रेन्ड्स को फोन करके शाम को कॉफी शॉप में पार्टी के लिए निमंत्रण भी दे दिया। पार्टी का तो बहाना था। वास्तव में तो उसे अपने फ्रेन्ड्स को नई गाड़ी दिखानी थी।

मयंक का परिवार बहुत ही श्रीमंत था। उसके **21**वें जन्मदिन पर उसके डैडी ने उसे एक कार भेंट की। इसके साथ ही उन्होंने मयंक के बिज़नेस के लिए एक ऑफिस भी तैयार करवा दिया।

कॉफी शॉप के पार्किंग में मयंक ने जैसे ही अपनी कार पार्क की, कि मंजीत और राघव ने उसे घेर लिया।

"कन्ग्रैचुलेशन्ज़ मयंक! मस्त कार है यार!" कार के बोनट पर हाथ फेरते हुए मंजीत ने कहा।

"दोस्त, अब हमें भी ड्राइव पर ले जाना!" कहकर राघव ने मयंक का कंधा थपथपाया।

"श्योर!" बाहें ऊँची करके, मयंक अपनी इम्पोर्टिड घड़ी की तरफ अपने दोस्तों का ध्यान खींचने की कोशिश करते हुए बोला, "चलो, अब अंदर जाकर पेट पूजा करते हैं।"

सभी ने अंदर जाकर अपनी-अपनी मनपसंद डिश ऑर्डर की। रेस्टॉरन्ट में मयंक और उसके फ्रेन्ड्स की मस्ती से कोलाहल मच गया। सूचित को रेस्टॉरन्ट में आते देखकर सभी ने तालियाँ बजाईं।

"वेलकम मिस्टर लेट कमर," मयंक ने सूचित को टॉन्ट मारते हुए कहा।

"सॉरी यार, बस मिस हो गई इसलिए देर हो गई," जेब से रूमाल निकालकर सूचित ने माथे का पसीना पोंछा और एक कुर्सी पर बैठ गया।

"सूचित आ गया है तो अब हम अपनी सरप्राइज़ दिखाते हैं।" मंजीत ज़ोर से बोला।

राघव ने वेटर को इशारा किया। वेटर ने एक बड़ा सा केक लाकर टेबल पर रख दिया। दूसरे दिन से मयंक अपने बिज़नेस की शुरुआत अपने नए ऑफिस से करनेवाला था। मयंक की इस नई शुरुआत का स्वागत करने के लिए

उसके दोस्तों ने उसके लिए केक ऑर्डर किया था।

अपना नया ऑफिस अपने दोस्तों को दिखाने के लिए मयंक ने एक प्लैन बनाया।

"मंजीत, सूचित, राघव - तुम्हारा ऑफिस तो मेरे ऑफिस के बिल्कुल पास ही है। एक काम करो। कल दोपहर एक बजे मेरे ऑफिस में आ जाना। हम साथ में ही लन्च के लिए जाएँगे। इस बहाने तुम लोग मेरा ऑफिस भी देख लेना।"

दूसरे दिन मिलने का प्लैन बनाकर, सब चले गए। कार रिवर्स करते ही मयंक की नज़र सूचित पर पड़ी, "सूचित, कार में बैठ जा। मैं तुझे घर छोड़ देता हूँ।"

"नो, इट्स ओके यार। अभी बस मिल जाएगी।"

"बहुत नखरे मत कर सूचित। बैठ जा न।"

बिना कुछ बोले, कार का डॉर खोलकर सूचित मयंक के साथ आगे की सीट पर बैठ गया।

सूचित और मयंक बचपन से एक-दूसरे के दोस्त थे। सूचित और मयंक के पिता भी एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे।

मयंक ने कार में म्यूज़िक ऑन किया। थोड़ी देर तक दोनों दोस्त चुप रहे। फिर अचानक मयंक बोला, "यार, एक बात पूछूँ?"

"क्या?"

"यार, तेरे पिता इतने पैसेवाले हैं। फिर भी तू इस तरह बस में घूमता है। यह तुझे शोभा देता है?"

मयंक का प्रश्न सुनकर सूचित थोड़ा मुस्कुराया। फिर बोला, "तूने ताई-ची का नाम सुना है?"

"हाँ, मार्शल आर्ट का एक प्रकार है, राइट?" मयंक ने पूछा।

"राईट,"

"लेकिन, उसका मेरे प्रश्न के साथ क्या लेना-देना है? मैंने तुझसे पूछा कि..." मयंक का वाक्य

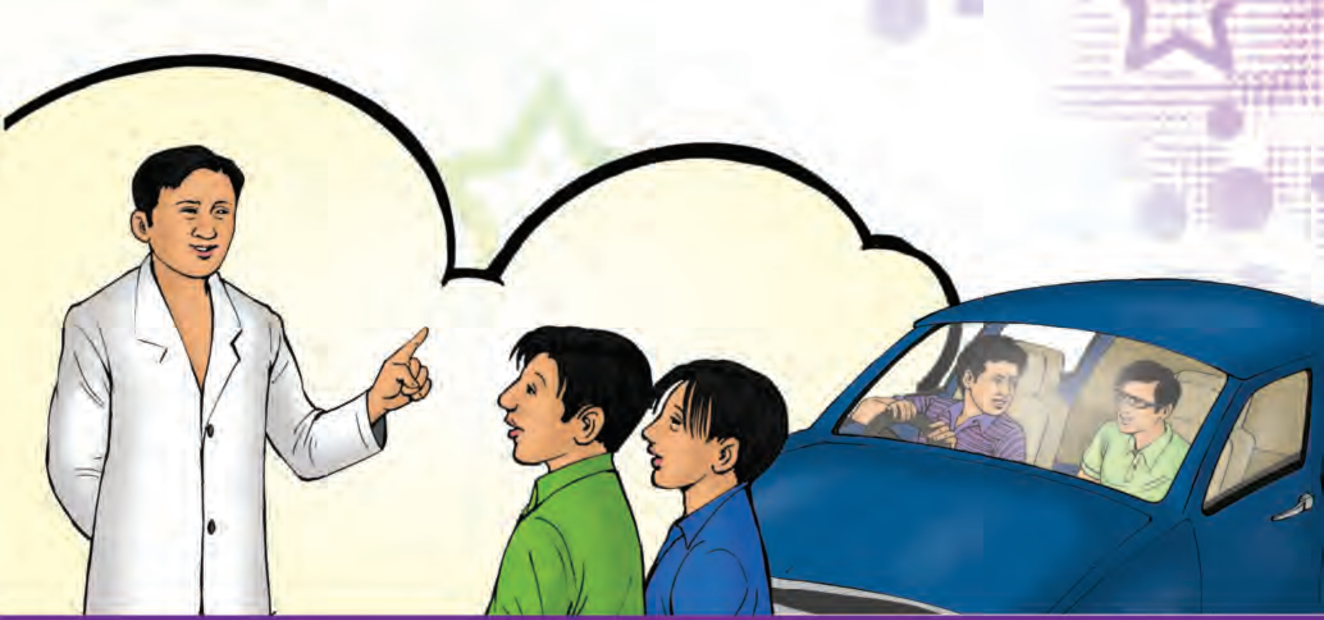

यदि तुम्हारे पास बहुत पैसे हों तो क्या तुम उन पैसों को हाथ में लेकर घूमते हो?

पूरा हो, उससे पहले ही सूचित ने कहा,

"हाँ, हाँ, तेरे प्रश्न का ही जवाब दे रहा हूँ। ताई-ची के प्रोफेसर वेंग सिंग, बहुत ही समृद्ध और प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। एक बार उनके शिष्यों ने उनसे पूछा कि वे भी अन्य सभी मार्शल आर्ट एक्सपर्टस की तरह, उन्हें मिला हुआ कलर्ड बेल्ट क्यों नहीं पहनते?

वेंग सिंग ने अपने शिष्य से कहा कि यदि तुम्हारे पास बहुत पैसे हों तो क्या तुम उन पैसों को हाथ में लेकर घूमते हो? नहीं। उन पैसों को तुम बैंक में रखते हो। उसी तरह, तरह-तरह की बेल्ट पहनकर हम जो जानते हैं उसका दिखावा करने की क्या ज़रूरत है? एक सच्चे योद्धा की खरी संपत्ति उसकी आंतरिक योजना और युद्ध कला होती है, न कि अपनी योग्यता का दिखावा।"

बात पूरी करते हुए सूचित ने कहा, "यार, मुझे मेरे पिता के पैसों का शो-ऑफ करने में कोई इन्ट्रस्ट नहीं है। जब मुझे ज़रूरत लगेगी तब मैं अपनी कमाई से कार खरीदूँगा।"

"मयंक, तू मेरा बचपन का दोस्त है इसलिए तुझसे कह रहा हूँ कि बेकार का शो-ऑफ करके, यदि दूसरों पर अपना इम्प्रेशन डालने जाते हैं तो वह इम्प्रेशन कभी टिकता नहीं है। जो इम्प्रेशन डालने के लिए मेहनत करता है, वह खुद का सुख-चैन खो देता है और अंत में मूर्ख बनता है। पर्सनैलिटी तो उसकी होती है जो कभी भी इम्प्रेशन डालने नहीं जाता। तुम भी देखना..."

"ओके गुरु जी," सूचित की बातों से मयंक का धैर्य जवाब दे गया, "मुझे तेरा लेक्चर नहीं सुनना। चल, तेरा घर आ गया। हम कल मिलते हैं।"

दूसरे दिन, अपने शानदार ऑफिस में पैर रखते ही मयंक की छाती फूल गई। उसके दोस्त जब उसका ऑफिस देखेंगे, तब उसका कितना ज़बरदस्त रौब पड़ेगा, इस विचार से ही मयंक मन ही मन खुश होने लगा।

"वॉट?!" मयंक थोड़ी देर के लिए स्तंभित हो गया। काटो तो खून न निकले ऐसी उसकी स्थिति हो गई थी।

रिवॉल्विंग चेयर पर बैठकर वह कल्पना की दुनिया में खो गया। तभी उसे खड़खड़ाहट सुनाई दी। ऑफिस के ग्लास डॉर की तरफ देखा तो रिसेप्शन एरिया में एक सज्जन आए थे। एक पल की भी देर किए बिना उस व्यक्ति पर अपना इम्प्रेशन डालने के लिए मयंक ने टेबल पर रखा हुआ फोन उठाया और एक हाथ ऊँचा करके उस व्यक्ति को बाहर रुकने का इशारा किया।

मयंक ज़ोर-ज़ोर से टेलिफोन पर शेख़ी बघारने लगा जैसे कि देश-विदेश की कंपनियों के साथ उसकी कंपनी का बिज़नेस चल रहा हो, ताकि उस व्यक्ति को बाहर सुनाई दे। ऐसी बातें वह टेलिफोन पर कर रहा था, तब तक उसके दोस्त भी आ गए।

2-3 *मिनट तक मयंक ने टेलिफोन पर बड़ी-बड़ी बातें करने का ढोंग किया और फिर वह बाहर आया। अपने दोस्तों को थोड़ी देर रुकने को कहा और फिर उस व्यक्ति से पूछा, "बोलो, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ।"*

वह सज्जन थोड़ा मुस्कुराकर बोले, "मैं आपके टेलिफोन की लाइन डालने आया हूँ।"

"वॉट?!" मयंक थोड़ी देर के लिए स्तंभित हो गया। काटो तो खून न निकले ऐसी उसकी स्थिति हो गई थी।

मंजीत और राघव एक-दूसरे को देखकर, बहुत ही मुश्किल से अपनी हँसी रोक पाए। जिन दोस्तों पर इम्प्रेशन डालने के लिए मयंक बैचेन था, आज खुद उनकी ही हँसी का पात्र बन गया।

मयंक ने सूचित को देखा। कल कहे हुए सूचित के शब्द उसे याद आ गए। शर्म से उसकी नजरें झुक गई। उस दिन से मयंक ने मन ही मन तय किया कि वह फिर कभी शो-ऑफ करने के झंझट में नहीं पड़ेगा।

यह तो नई

लोग आपको
बड़ा कब समझेंगे?
जब आप लघु
बन जाओगे तब।

यदि हमारे पास दो-चार गाड़ियाँ हों तो उसका अभिमान नही करना चाहिए। अभिमान करते ही उनकी जाने की तैयारी हो जाती है। जैसे-जैसे हमारे पास विशेष सांसारिक साधन होते जाएँ, वैसे-वैसे ज्यादा नम्र होते जाना चाहिए।

ही बात!

यदि अहंकार हो तो
चाहे कितना भी
खूबसूरत हो फिर
भी कुरूप लगता है,
इम्प्रेशन नही पड़ता।

इम्प्रेशन और
पर्सनैलिटी में फर्क है।
पर्सनैलिटी में औरों को
गिरान की वृत्ति नही
होती, जबकि इम्प्रेशन में
औरों को गिराने की
वृत्ति आ जाती है।

प्रभाव किसका पड़ता है?

तुरंत ही उसने रिया को फोन लगाया...
हाय रिया... मुझे कन्ग्रैचुलेट कर। साइन्स टैलन्ट सर्च एग्ज़ाम में ऑल ओवर स्टेट में मेरा थर्ड रैंक आया है।
कन्ग्रैचुलेशन्ज़ अनुष्का, और...
एक मिनट, पहले मेरी बात सुन। अब डैडी मुझे नया आइपैड दिलाएँगे... और वेकेशन में मुझे सिंगापुर घूमाने ले जाएँगे... याहू!
ओ माइ गॉड। सभी को बताए बिना मैं नहीं रह सकती। चल बाय।
रिया की बात सुने बिना ही अनुष्का ने फोन रख दिया।
हमारे स्कूल के लिए बहुत ही गौरव की बात है कि साइन्स टैलन्ट सर्च एग्ज़ाम में, राज्यभर में पहला नंबर रिया जोशी और तीसरा नंबर अनुष्का शाह को मिला है।
तालियों की गड़गड़ाहट से सभी विद्यार्थियों ने रिया और अनुष्का का अभिनंदन किया। रिया का नाम सुनकरअनुष्का का चेहरा मुरझा गया। जैसे गुब्बारे में से हवा निकल गई हो।
और अब दूसरी महत्त्वपूर्ण सूचना। कल 8 बजे गेट नं. 2 से स्कूल बसीज़ अजबगढ़ के हिस्टॉरिकल टूर पर जाने के लिए निकलेंगी।

स्कूल बस में अंताक्षरी की धूम रही। अजबगढ़ कब आ गया इसका किसी को पता ही नहीं चला। टूर गाइड ने किले से शुरुआत की।
घूमते-घूमते टूर गाइड बच्चों को एक खंड में लेकर आया।
बच्चों, यह खंड दरबार के राजगुरु कृपाल सिंह का है। इसी खंड में उनकी मृत्यु हुई थी।
कहा जाता है कि कृपाल सिंह बहुत सी गुप्त विद्याओं के जानकार थे। मृत्यु के बाद गुरु जी अपने कौन से शिष्य को सभी विद्याओं का ज्ञान सौंपकर जाएँगे यह एक बड़ा प्रश्न था।
गुरु पर अच्छी छाप डालने के लिए सभी शिष्य तरह-तरह की तरकीबें करते, सिवाय एक के, उसका नाम था गगनदीप।

अन्य सभी शिष्य, मौका पाकर, गुरु के सामने अपने अच्छे काम, गुण और विद्या का प्रदर्शन करते, जबकि गगनदीप गुरु के सामने खुद से होनेवाली गलतियों को कबूल करते।
मृत्युशैय्या पर गुरु ने गगनदीप को अपनी सभी विद्याओं का ज्ञान सौंपा। यह देखकर अन्य शिष्य बहुत नाराज़ हो गए।
गुरु ने सभी शिष्यों को अपने पास बुलाया।
पुत्रो, जो हमेशा अपनी अच्छाइयों का दिखावा करता है उसकी सही पहचान किसी को किस तरह हो सकती है? गगनदीप को मैंने इसलिए पसंद किया कि उसने कभी मेरे ऊपर अपनी अच्छी छाप डालने का प्रयत्न नहीं किया।
एक बात का हमेशा ध्यान रखना। प्रभाव तो उसका पड़ता है जो कभी भी औरों पर अपनी छाप डालने का प्रयत्न नहीं करता।

जीवंत उदाहरण

एक उत्साही युवक की बात है। वह विनोबा जी के पास आया। गर्व के साथ अपना परिचय देते हुए उसने कहा, "मुझे जवाहरलाल जी भी जानते हैं।"

"और कौन-कौन जानते हैं?" विनोबा जी ने धीरे से पूछा।

युवक ने कहा, "राजा जी जानते हैं," "टंडन जी और सरदार साहब भी जानते हैं।"

"गाँव के और पड़ोसी गाँव के लोग जानते हैं क्या?" विनोबा जी ने पूछा।

"नहीं, बाबा! ज्यादातर में बाहर ही रहा हूँ न... इसलिए गाँव में किसी को खास पहचानता नहीं। गाँववाले भी मुझे नहीं जानते।"

"तो जाओ। पहले उन्हें जानो, उनसे परिचय करो, फिर मेरे पास आना।" विनोबा जी बोले।

"विचारपोथी" में विनोबा जी ने लिखा है : "पर्वत की तरह ऊँचा होने में मुझे सुख नहीं लगता। मेरी मिट्टी तो आसपास की ज़मीन पर ही फैल जाए, इसमें ही मुझे आनंद है।"

देखा मित्रों, बड़ाई दिखाने में बड़ाई नहीं है, लेकिन अपने आसपास के व्यक्तियों के साथ मिलजुलकर रहने में ही बड़प्पन है।

चलो खेलें...

1. नीचे दिए गए चित्र में से बिंदुओं को जोड़कर चित्र पूर्ण कीजिए।

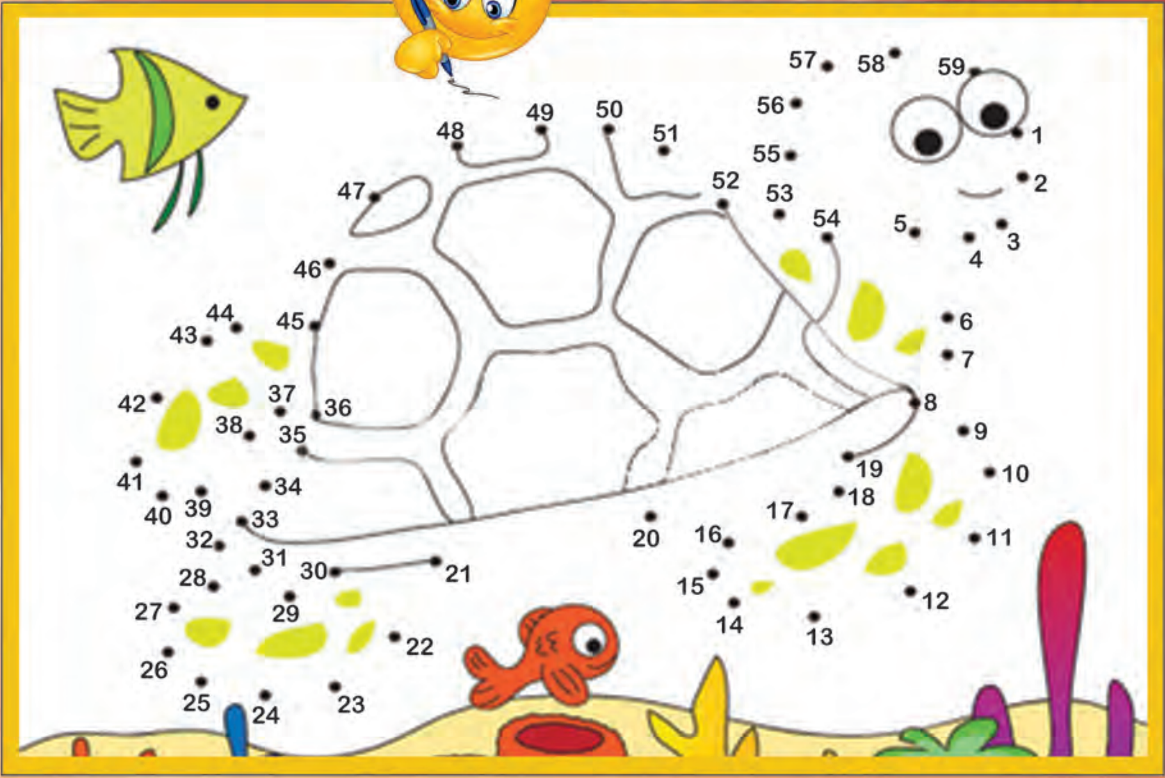

2. दिए गए चित्र में से रास्ता ढूँढिए।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

राजगृही नगर में रोज़ पाँच सौ भैंसों का वध करनेवाला एक अत्यंत निर्दयी कालसौकरिक नामक कसाई रहता था।

एक दिन श्रेणिक राजा ने उसकी नर्कगति टालने के उपाय के रूप में उससे जीव हत्या बंद करने के लिए कहा। उसके नहीं मानने पर राजा ने उसे एक कुँए में उल्टा लटका दिया, जिससे वह हत्या नहीं कर पाए।

उस समय उसने अपने मन की कल्पना से सैकड़ों भैंसों का पानी में ही वध कर दिया। इस तरह श्रेणिक राजा की नर्कगति तो टली नहीं, लेकिन उसने भी सातवीं नर्क का आयुष्य बाँध लिया।

मृत्यु का समय नज़दीक आने पर वह रोग से अत्यंत पीड़ित होने लगा। तब उसके पुत्र सुलस ने पिता की शांति के लिए मनपसंद खान-पान, सुंदर गीतगान, कोमल पुष्प शैय्या, सुगंधी, चंदन का लेप आदि बहुत से उपचार किए। फिर भी उनसे उसे ज़रा भी सुख नहीं मिला। उल्टा, उसे ज्यादा जलन होने लगी। इसलिए सुलस ने अभय कुमार के पास जाकर उपाय पूछा।

यह सुनकर अभय कुमार ने कहा, "तुम्हारे पिता नर्क में जानेवाले हैं, इसलिए सुख के उपचार उनके लिए दुःख का कारण बनेंगे। उन्हें नीरस भोजन दो, नमकीन पानी पिलाओ, गधे और कुत्तों की आवाज़ें सुनाओ, खुरदरी शैय्या पर सुलाओ और गंदगी का लेप करो। ऐसे विरुद्ध उपाय करने से उन्हें सुख लगेगा।"

अभय कुमार के कहने से सुलस ने वही उपचार किया, जिससे कालसौकरिक को थोड़ी शांति हुई। अंत में वह मृत्यु के बाद सातवीं नर्क में गया। सुलस ने पाप का फल प्रत्यक्ष देखा इसलिए वह महावीर स्वामी का श्रावक बन गया और जीव हत्या बंद कर दी।

एक दिन सुलस से उसकी माता, बहन आदि स्वजनों ने मिलकर फिर से कसाई का धंधा शुरू करने के लिए कहा।

सुलस ने पाप का फल बताकर ऐसा करने के लिए साफ मना कर दिया। यह सुनकर वे बोले, "धन की तरह इस पाप के फल को भी हम बाँट लेंगे।"

तब सुलस ने एक कुल्हाड़ी से अपने पैर पर एक घाव किया और उसकी पीड़ा से वह ज़मीन पर गिर गया। फिर वह बोला, "आप पाप बाँट लेने के लिए कह रहे हो तो अभी मेरी इस पीड़ा को बाँट लो, क्योंकि मुझे बहुत दुःख हो रहा है।"

स्वजन बोले, "यह तो नहीं बाँटी जा सकती, यह तो जो करेगा वही भुगतेगा।"

सुलस ने कहा, "जब आप इस प्रत्यक्ष पीड़ा को भी नहीं बाँट सकते तो पाप किस तरह बाँट लोगे?"

यह सुनकर स्वजन निरुत्तर हो गए। आखिर में सुलस ने आजीवन जीव हत्या नहीं की और अंत में मृत्यु के बाद स्वर्ग में गया।

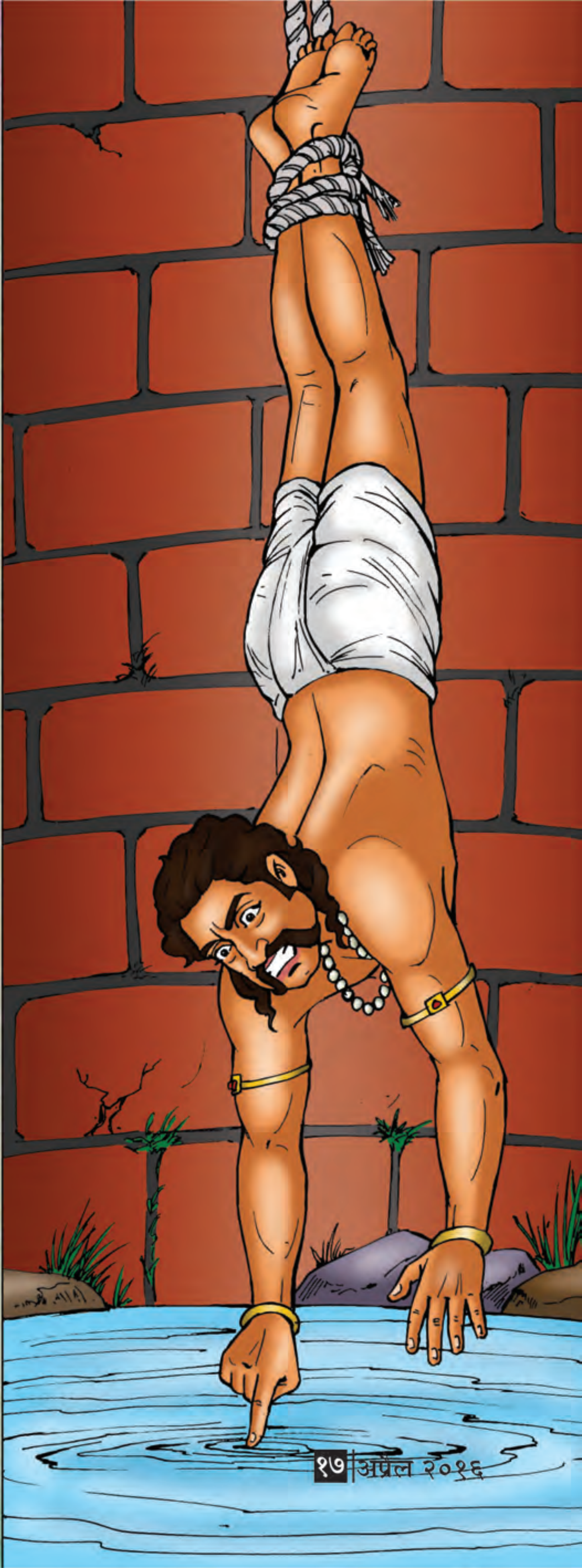

मीठी यादें

एक ब्रह्मचारी भाई का ज्ञान दिन था। दादा दर्शन की छत पर नीरू माँ वॉक कर रहे थे। नीरू माँ का वॉक पूरा होने के बाद उन भाई ने नीरू माँ के पैर छूए और आशीर्वाद लिया। उस समय नीरू माँ के साथ दूसरे ब्रह्मचारी भाई भी थे। ज्ञान दिन होने से वजह से उन भाई ने दूसरे भाईयों के भी पैर छूए।

यह देखकर नीरू माँ ने तुरंत ही उन भाई से पूछा, "अरे भाई, सिर्फ अच्छा दिखाने के लिए पैर छू रहे हो या हकीकत में आशीर्वाद माँग रहे हो?"

उन भाई ने कहा, "नहीं, नहीं नीरू माँ दिल से माँग रहा हूँ।"

लेकिन बाद में उन भाई को ख्याल आया कि, वास्तव में दूसरे भाईयों का आशीर्वाद लेते समय उन्हें नीरू माँ की हाज़िरी ध्यान में थी।

उन्हें मन में हो रहा था, कि "नीरू माँ देखेंगे तो यह विनय देखकर कितने खुश हो जाएँगे।" उन्हें अपना दोष बहुत ही चुभने लगा।

इस तरह नीरू माँ की छोटी सी टकोर से उन भाई को अपनी प्रकृति में बसा हुआ, "अच्छा दिखाने के" दोष पर जागृति रहने लगी।

मुँबई में पूज्य श्री के समक्ष बच्चों द्वारा नृत्य प्रस्तुत किए गए

ज्ञान एनिमेशन DVD का ओपनिंग

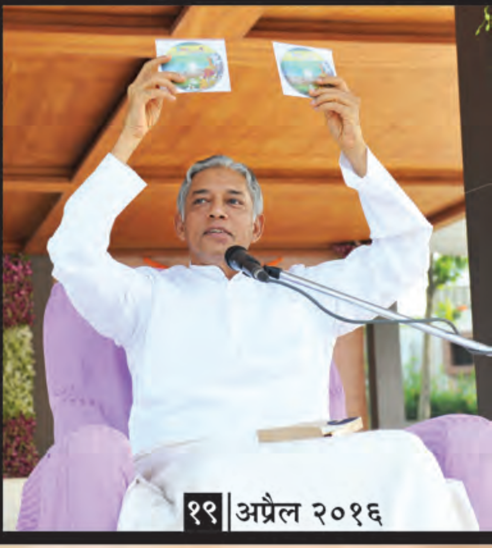

Akram Express
April 2016
Year : 4, Issue : 1
Conti. Issue No.: 37

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

हा...हा...ही...ही...

टीचर - जो मेरे सवाल का सही जवाब देगा, वो घर जा सकता है।
उसी वक्त संता ने अपना बैग बहार फेंक दिया।
टीचर - वो बैग किसने फेंका?
संता - मैंने... अब मैं घर जाऊँ??

....

संता अंग्रेज़ी सीख रहा था...
संता - यार बंता... **"I am Going"** का मतलब क्या होता है?
बंता - मैं जा रहा हूँ...
संता - अबे ऐसे कैसे जाएगा?
साला **20** लोगों से पूछ चूका हूँ, सब चले जाने की बात करते हैं...
जबाव बता के जा!!

अध्यापिका - **1869** में क्या हुआ था?
छात्र - गांधी जी का जन्म।
अध्यापिका - **1873** में क्या हुआ था?
छात्र - गांधी जी **4** साल के हो गए थे।

....

यार उठ, भूकंप आ रहा है, सारा घर हिल रहा है।
बंता - सो जा सो जा, घर गिरेगा तो मकान मालिक का, हम तो किराएदार है।

....

अध्यापक - बताओ, सब से ज्यादा नशा किस चीज़ में होता है?
एक बच्चा - किताबों में...।
अध्यापक - वो कैसे? मैं समझा नही।
बच्चा - किताब खोलते ही नींद आने लगती है...।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published